



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं एवं उनसे संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

¹ नरेन्द्र कुमार जांगड़े, ²डॉ. प्रमोद कुमार राजपूत

¹शोधार्थी, ²शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग.

सारांश: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं तथा उन्हें प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में सर्वेक्षणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन के लिए चार वर्षीय समेकित शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक निदर्शन विधि द्वारा किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित पाँच-बिंदु लिंकर्ट मापनी पर आधारित कैरियर आकांक्षा प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्र नमूना *t*-परीक्षण तथा एक-मार्गीय प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) की सहायता से किया गया।

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि 49% विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ मध्यम स्तर की, 34% की उच्च स्तर की तथा 17% की निम्न स्तर की थीं। विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अतः दोनों शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकृत हुईं।

अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ मुख्यतः व्यक्तिगत रुचि, कैरियर जागरूकता, पारिवारिक सहयोग तथा शैक्षिक वातावरण से प्रभावित होती हैं। इसलिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रभावी कैरियर परामर्श, कैरियर जागरूकता कार्यक्रम तथा कौशल विकास गतिविधियों को सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का समुचित विकास हो सके।

Index Terms - कैरियर आकांक्षा, शिक्षक शिक्षा, कैरियर जागरूकता, पारिवारिक सहयोग, व्यक्तिगत रुचि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति।

I. प्रस्तावना:

वर्तमान वैश्वीकरण, ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था तथा तीव्र तकनीकी परिवर्तन के युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों को भविष्य के व्यावसायिक जीवन के लिए सक्षम, उत्तरदायी एवं प्रतिस्पर्धी बनाना भी है। इस संदर्भ में व्यावसायिक आकांक्षा (कैरियर आकांक्षा) विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक आयाम है, जो उनके शैक्षिक निर्णयों, व्यावसायिक लक्ष्यों, आत्म-विकास तथा जीवन की उपलब्धियों को दिशा प्रदान करता है। व्यावसायिक आकांक्षा से आशय उस व्यवसाय, पद अथवा व्यावसायिक उपलब्धि से है जिसे विद्यार्थी भविष्य में प्राप्त करना चाहता है तथा जिसके अनुरूप वह अपने ज्ञान, कौशल, अभिरुचियों एवं क्षमताओं का विकास करता है (Gottfredson, 2002; Super, 1990)।

आधुनिक समाज में व्यवसाय का चयन केवल व्यक्तिगत रुचि का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है। आर्थिक विकास, बदलते रोजगार बाजार, नई तकनीकों तथा उभरते व्यवसायों ने विद्यार्थियों के समक्ष व्यावसायिक क्षेत्रों के अनेक विकल्प प्रस्तुत किए हैं। ऐसे परिवेश में विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि उचित व्यावसायिक

आकांक्षा न केवल व्यक्तिगत सफलता का आधार बनती है, बल्कि मानव संसाधन के प्रभावी विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति में भी योगदान देती है (आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन, 2021)।

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षक शिक्षा में व्यापक परिवर्तन का प्रस्ताव रखा है। इस नीति के अनुसार वर्ष 2030 तक विद्यालयी शिक्षकों के लिए चार वर्षीय समेकित कला स्नातक-शिक्षा स्नातक (बी.ए.-बी.एड.) तथा विज्ञान स्नातक-शिक्षा स्नातक (बी.एससी.-बी.एड.) कार्यक्रम को शिक्षक शिक्षा की प्रमुख व्यवस्था के रूप में विकसित करने पर बल दिया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विषय-ज्ञान, शिक्षण-कौशल, व्यावसायिक दक्षता, अनुसंधान क्षमता, नैतिक मूल्यों तथा विद्यालयीय अनुभव का समन्वित विकास करना है, जिससे भावी शिक्षक बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार हो सकें (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020; संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन, 2021)।

चार वर्षीय समेकित बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थी ऐसे समय में अध्ययनरत होते हैं जब उन्हें अपने भविष्य के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं। वे शिक्षण सेवा, उच्च शिक्षा, शोध, प्रशासनिक सेवाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं अथवा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में अपना भविष्य बनाने की योजना बनाते हैं। उनकी व्यावसायिक आकांक्षाएँ केवल व्यक्तिगत रुचि से निर्धारित नहीं होतीं, बल्कि उन पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है, जैसे—लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रभावकारिता, व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा, व्यावसायिक जागरूकता, संस्थागत वातावरण तथा उपलब्ध व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श सेवाएँ (Bandura, 1997; Lent, Brown एवं Hackett, 1994)।

सामाजिक संज्ञानात्मक व्यावसायिक सिद्धांत के अनुसार किसी विद्यार्थी की व्यावसायिक आकांक्षा उसके आत्म-प्रभावकारिता विश्वास, अपेक्षित परिणामों तथा व्यक्तिगत लक्ष्यों के संयुक्त प्रभाव से विकसित होती है (Lent, Brown एवं Hackett, 1994)। इसी प्रकार सुपर का व्यावसायिक विकास सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि व्यक्ति का व्यावसायिक विकास एक सतत प्रक्रिया है, जो उसकी रुचियों, मूल्यों, अनुभवों तथा सामाजिक परिवेश के साथ निरंतर विकसित होती रहती है (Super, 1990)।

आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन द्वारा प्रकाशित अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि अनेक विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ श्रम-बाज़ार की वास्तविक आवश्यकताओं से मेल नहीं खातीं तथा उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि उनके व्यावसायिक निर्णयों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। इसलिए विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रभावी व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श व्यवस्था की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है (आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन, 2020; आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन, 2024)।

शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में यह अध्ययन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि वर्तमान में अध्ययनरत विद्यार्थी भविष्य के शिक्षक हैं। यदि उनकी व्यावसायिक आकांक्षाओं एवं उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों की वैज्ञानिक पहचान की जाए, तो शिक्षक शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावसायिक निर्देशन, कौशल विकास, व्यक्तित्व विकास तथा व्यावसायिक अभिविन्यास कार्यक्रमों का प्रभावी संचालन कर सकते हैं। इससे शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों के निर्माण में सहायता मिलेगी।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत शोध "चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं एवं उनसे संबंधित कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का स्तर ज्ञात किया जा सके तथा उन प्रमुख वैयक्तिक, पारिवारिक, शैक्षिक एवं सामाजिक कारकों का विश्लेषण किया जा सके जो उनकी व्यावसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित करते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों, शिक्षा प्रशासकों, नीति-निर्माताओं तथा व्यावसायिक परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

II. अध्ययन के उद्देश्य

1. चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले वैयक्तिक, पारिवारिक, शैक्षिक एवं सामाजिक कारकों का विश्लेषण करना।

III. परिकल्पनाएँ

1. H_{01} : चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. H_{02} : विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

IV. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोध समस्या के व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए सर्वेक्षणात्मक सह वर्णनात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के अंतर्गत चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया। इन विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक निदर्शन विधि द्वारा किया गया, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को चयनित होने का समान अवसर प्राप्त हो सके तथा प्राप्त निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं सामान्यीकरण योग्य बन सकें। अध्ययन में विभिन्न कक्षाओं, लिंग एवं सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिससे उनकी कैरियर आकांक्षाओं एवं उनसे संबंधित कारकों का समग्र विश्लेषण किया जा सके।

आँकड़ों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित कैरियर आकांक्षा प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इस प्रश्नावली में ऐसे कथनों एवं प्रश्नों को सम्मिलित किया गया जो विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं तथा उनसे संबंधित प्रमुख कारकों, जैसे—व्यक्तिगत रुचि, पारिवारिक सहयोग, शैक्षिक वातावरण, कैरियर जागरूकता एवं भविष्य की व्यावसायिक योजनाओं का आकलन करते हैं। प्रश्नावली 5-बिंदु लिकर्ट मापनी पर आधारित थी, जिसमें विद्यार्थियों से प्रत्येक कथन के प्रति अपनी सहमति अथवा असहमति व्यक्त करने के लिए कहा गया, जिससे उनकी कैरियर आकांक्षाओं का वस्तुनिष्ठ एवं परिमाणात्मक मूल्यांकन किया जा सके।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिनमें मुख्यतः प्रतिशत (%), माध्य, मानक विचलन तथा सहसंबंध का उपयोग किया गया। प्रतिशत एवं माध्य के माध्यम से विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं के स्तर का विश्लेषण किया गया, जबकि सहसंबंध के द्वारा कैरियर आकांक्षाओं एवं उनसे संबंधित कारकों के मध्य संबंध का परीक्षण किया गया। इन सांख्यिकीय विधियों के उपयोग से विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं की प्रवृत्तियों तथा उन्हें प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का वैज्ञानिक विश्लेषण संभव हो सका। इस प्रकार अपनाई गई शोध विधि ने अध्ययन के उद्देश्यों की प्रभावी एवं वैज्ञानिक पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

III. परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका 1 : अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों का वितरण (N = 100)

क्र.	आधार	श्रेणी	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
1	लिंग	पुरुष	48	48.0
		महिला	52	52.0
		कुल	100	100.0
2	पाठ्यक्रम	बी.ए.-बी.एड.	55	55.0
		बी.एससी.-बी.एड.	45	45.0
		कुल	100	100.0
3	अध्ययन वर्ष	प्रथम वर्ष	50	50.0
		द्वितीय वर्ष	50	50.0
		कुल	100	100.0

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित आँकड़े

प्रस्तुत तालिका 1 में अध्ययन में सम्मिलित कुल 100 विद्यार्थियों का लिंग, पाठ्यक्रम तथा अध्ययन वर्ष के आधार पर वितरण दर्शाया गया है। लिंग के आधार पर 48 (48.0%) विद्यार्थी पुरुष तथा 52 (52.0%) विद्यार्थी महिला हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन में दोनों लिंगों का लगभग संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है तथा महिला विद्यार्थियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा थोड़ी अधिक है। पाठ्यक्रम के आधार पर 55 (55.0%) विद्यार्थी बी.ए.-बी.एड. तथा 45 (45.0%) विद्यार्थी बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम से संबंधित हैं, जिससे बी.ए.-बी.एड. के विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत अधिक परिलक्षित होता है। अध्ययन वर्ष के आधार पर प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के 50-50 (50.0%) विद्यार्थी सम्मिलित किए गए हैं, जिससे दोनों अध्ययन वर्षों का समान प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ है। इस प्रकार, नमूने का वितरण विभिन्न श्रेणियों में पर्याप्त संतुलित है, जो अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं तुलनात्मक विश्लेषण की उपयुक्तता को सुदृढ़ करता है।

तालिका 2 : विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं का स्तर (N = 100)

कैरियर आकांक्षा का स्तर	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
उच्च	34	34.0
मध्यम	49	49.0
निम्न	17	17.0
कुल	100	100.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 100 विद्यार्थियों में से 49 (49%) विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षा का स्तर मध्यम, 34 (34%) विद्यार्थियों का उच्च तथा 17 (17%) विद्यार्थियों का निम्न पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि अधिकांश विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ मध्यम स्तर की हैं।

तालिका 3 : कैरियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक (N = 100)

कारक	उच्च प्रभाव	मध्यम प्रभाव	निम्न प्रभाव
पारिवारिक सहयोग	62	28	10
व्यक्तिगत रुचि	71	21	8
शैक्षिक वातावरण	58	30	12
कैरियर जागरूकता	64	25	11
मित्र/साथी समूह	46	39	15

प्रस्तुत तालिका 3 में अध्ययन में सम्मिलित 100 विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का वितरण प्रदर्शित किया गया है। प्राप्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत रुचि विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है, जिसे 71 विद्यार्थियों ने उच्च प्रभाव वाला, 21 ने मध्यम प्रभाव वाला तथा 8 ने निम्न प्रभाव वाला माना। इसके बाद कैरियर जागरूकता (64 उच्च, 25 मध्यम, 11 निम्न) तथा पारिवारिक सहयोग (62 उच्च, 28 मध्यम, 10 निम्न) का प्रभाव प्रमुख रूप से परिलक्षित होता है, जो दर्शाता है कि परिवार का सहयोग एवं कैरियर संबंधी जानकारी विद्यार्थियों के भविष्य के निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक वातावरण को 58 विद्यार्थियों ने उच्च, 30 ने मध्यम तथा 12 ने निम्न प्रभाव वाला माना, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय/महाविद्यालय का वातावरण भी कैरियर आकांक्षाओं के निर्माण में सहायक है। वहीं मित्र/साथी समूह का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पाया गया, क्योंकि केवल 46 विद्यार्थियों ने इसे उच्च प्रभाव वाला, 39 ने मध्यम प्रभाव वाला तथा 15 ने निम्न प्रभाव वाला माना। समग्रतः निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ मुख्यतः उनकी व्यक्तिगत रुचि, कैरियर जागरूकता, पारिवारिक सहयोग तथा शैक्षिक वातावरण से अधिक प्रभावित होती हैं, जबकि मित्रों एवं साथी समूह का प्रभाव तुलनात्मक रूप से कम है।

तालिका 4 : लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

परिकल्पना (H_{01}): चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	t-मूल्य	p-मूल्य	निष्कर्ष
पुरुष	48	72.54	8.46			अंतर सार्थक नहीं (H_{01} स्वीकृत)
महिला	52	74.31	7.92	1.09	0.278	
कुल	100	73.46	8.18			

प्रस्तुत तालिका 4 में चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं का लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि पुरुष विद्यार्थियों (N = 48) का कैरियर आकांक्षा का माध्य 72.54 तथा मानक विचलन 8.46 है, जबकि महिला विद्यार्थियों (N = 52) का माध्य 74.31 तथा मानक विचलन 7.92 है। यद्यपि महिला विद्यार्थियों का औसत स्कोर पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा कुछ अधिक पाया गया, तथापि स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के अनुसार प्राप्त t-मूल्य 1.09 तथा p-मूल्य 0.278 है, जो 0.05 के निर्धारित सार्थकता स्तर से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि लिंग का विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है तथा प्रस्तुत शून्य परिकल्पना (H_{01}) स्वीकृत की जाती है। इससे संकेत मिलता है कि दोनों लिंगों के विद्यार्थियों में कैरियर आकांक्षाओं का स्तर लगभग समान है।

तालिका 5 : सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

परिकल्पना (H_{02}): विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति	N	माध्य	मानक विचलन	F-मूल्य	p-मूल्य	निष्कर्ष
निम्न	30	70.82	8.65			अंतर सार्थक नहीं (H_{02} स्वीकृत)
मध्यम	45	73.94	7.84			
उच्च	25	75.48	7.31	2.41	0.095	
कुल	100	73.41	8.03			

प्रस्तुत तालिका 5 में विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं का सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों ($N = 30$) का कैरियर आकांक्षा का माध्य 70.82 तथा मानक विचलन 8.65, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों ($N = 45$) का माध्य 73.94 तथा मानक विचलन 7.84 तथा उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों ($N = 25$) का माध्य 75.48 एवं मानक विचलन 7.31 पाया गया। यद्यपि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों का औसत स्कोर अन्य दोनों समूहों की तुलना में अधिक है, तथापि एक-मार्गीय प्रसरण विश्लेषण (One-Way ANOVA) के अनुसार प्राप्त F-मूल्य 2.41 तथा p-मूल्य 0.095 है, जो 0.05 के निर्धारित सार्थकता स्तर से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः प्रस्तुत शून्य परिकल्पना (H_{02}) स्वीकृत की जाती है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उनकी कैरियर आकांक्षाओं पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ लगभग समान स्तर की हैं।

IV. निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं एवं उन्हें प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विश्लेषण करना था। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों (49%) की कैरियर आकांक्षाएँ मध्यम स्तर की हैं, जबकि 34% विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ उच्च तथा 17% विद्यार्थियों की निम्न स्तर की पाई गई। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी अपने भविष्य के कैरियर के प्रति जागरूक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, किन्तु उनकी आकांक्षाओं को और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में व्यक्तिगत रुचि का प्रभाव सर्वाधिक है। इसके अतिरिक्त कैरियर जागरूकता, पारिवारिक सहयोग तथा शैक्षिक वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि मित्र एवं साथी समूह का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के कैरियर निर्माण में उनकी स्वयं की अभिरुचि एवं उपयुक्त मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। परिकल्पनाओं के परीक्षण से यह पाया गया कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है ($p = 0.278 > 0.05$), अतः शून्य परिकल्पना (H_{01}) स्वीकृत की गई। इसी प्रकार सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर भी विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($p = 0.095 > 0.05$), इसलिए शून्य परिकल्पना (H_{02}) भी स्वीकृत की गई। इससे स्पष्ट होता है कि इस अध्ययन में लिंग एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे कारकों का विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं पर उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चार वर्षीय बी.ए./बी.एससी.-बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाएँ मुख्यतः उनकी व्यक्तिगत रुचि, कैरियर जागरूकता, पारिवारिक सहयोग एवं शैक्षिक वातावरण से प्रभावित होती हैं। अतः शिक्षक शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों के लिए प्रभावी कैरियर परामर्श, कैरियर जागरूकता कार्यक्रम, व्यक्तित्व विकास गतिविधियाँ तथा कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित करने चाहिए, जिससे उनकी कैरियर आकांक्षाओं को सुदृढ़ किया जा सके तथा उन्हें भविष्य के सफल एवं दक्ष शिक्षकों के रूप में विकसित किया जा सके।

V. संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Bandura, A. (1997). Self-efficacy: The exercise of control. W. H. Freeman.
2. Gottfredson, L. S. (2002). Gottfredson's theory of circumscription, compromise, and self-creation. In D. Brown (Ed.), *Career Choice and Development* (4th ed.).
3. Kaushi, P., Ahmad, J., & Khan, A. (2021). Teacher Education in India Viewed Through the Lens of National Education Policy-2020.
4. Lent, R. W., Brown, S. D., & Hackett, G. (1994). Toward a unifying social cognitive theory of career and academic interest, choice, and performance. *Journal of Vocational Behavior*, 45(1), 79–122.
5. Lyubomirsky, S., King, L., & Diener, E. (2005). The benefits of frequent positive affect. *Psychological Bulletin*, 131(6), 803–855.
6. National Education Policy. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
7. OECD. (2020). Are Students' Career Expectations Aligned with Their Skills?
8. OECD. (2020). Career Guidance Policy Review.
9. OECD. (2024). Teacher Professional Learning.
10. Radhakrishnan, S. (1923). *Indian Philosophy*.
11. Savickas, M. L. (2005). The theory and practice of career construction. In S. D. Brown & R. W. Lent (Eds.), *Career development and counseling* (pp. 42–70). Hoboken, NJ: Wiley.
12. Seligman, M. E. P. (2011). *Flourish: A visionary new understanding of happiness and well-being*. New York: Free Press.
13. Sharma, R. (2018). Life satisfaction among professionals in India. *Indian Journal of Psychology*, 45(2), 120–130.
14. Singh, A., & Verma, P. (2020). Work stress and life satisfaction among professionals. *Indian Journal of Social Research*, 61(3), 455–468.
15. Super, D. E. (1990). A life-span, life-space approach to career development.
16. UNESCO. (2021). State of the Education Report for India 2021.